- Dr. B. K

बुद्धि का मापन

बिने तथा साइमन ने 1905 ई० मे बच्चों की बुद्धि की जाँच करने के लिए एक बुद्धि परीक्षण का निर्माण किया जिसे बिने-साइमन परीक्षण कहा जाता है। इस परीक्षण में 3 से 15 साल के बच्चों की बुद्धि को मापने की व्यवस्था किया गया. यह एक शाब्दिक परीक्षण था जो सामान्य बुद्धि के अवधारणा पर आधारित था।

इस परीक्षण में (1908) में संशोधन हुआ. 1916 में पुनः टर्मन ने इसमें संशोधन किया और प्रश्नों की सं० 90 कर दी गयी. चूँकि स्टैनफोर्ड वि० वि० में यह परीक्षण हुआ था इसलिए इसे स्टैनफोर्ड-बिने बुद्धि परीक्षण कहा जाता है अथवा टर्मन बुद्धि परीक्षण कहा जाता है।

बुद्धि लब्धि (IQ)

स्टर्न (1911) ने मानसिक लब्धि को सर्वप्रथम उजागर किया। उन्होंने कहा कि किसी बच्चे की मानसिक आयु (MA) को उसकी वास्तविक आयु (CA) से विभाजित कर बुद्धि-लब्धि (I.Q.) प्राप्त किया जा सकता है।-

$$IQ = \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}}$$

स्टर्न ने कहा, यदि मानसिक आयु में वास्तविक आयु का भाग देने से भागफल 1 आये तो बालक सामान्य - बुद्धि वाला समझा जायेगा।
यदि 1 से अधिक भागफल आये तो बालक तीव्र बुद्धि वाला समझा जायेगा।
उपरोक्त विधि से सिर्फ इतना पता चलता है कि एक बालक दूसरे बालक के बुद्धि से कम या अधिक बुद्धि वाला है। एक बालक दूसरे बालक के बुद्धि स्तर से कितना अधिक या कम है, इसकी जानकारी नहीं होती है।
इसी कमी को दूर करने के लिए टरमन (1916) ने बुद्धि-लब्धि के लिए एक सूत्र निकाला जो है -

$$\text{बुद्धि-लब्धि (I.Q)} = \frac{\text{मानसिक आयु (M.A)}}{\text{वास्तविक आयु (C.A)}} \times 100$$

यदि किसी बच्चे की मानसिक आयु 10 वर्ष और वास्तविक आयु 8 वर्ष हो तो उसकी बुद्धि लब्धि :

$$IQ = \frac{M.A}{C.A} \times 100 = \frac{10}{8} \times 100 = \frac{25}{2} = 125$$